मधुर वाणी की महत्ता और साहित्य द्वारा उसके प्रचलन की संभावना

डॉ एस कृष्ण बाबु
अध्यक्ष, वाजा ए पी एवं हिन्दी साहित्य भारती,
आन्ध्र प्रदेश इकाई
मोबाइल : 8885990444

यह तो एक सर्वविदित सत्य है कि इस अनन्त सृष्टि में मात्र मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसके पास न केवल वाणी अर्थात् वाक्क्षमता है बल्कि उसमें अभिव्यक्त अपार सामग्री को लिपिबद्ध करके अगली असंख्य पीढियों तक सुरक्षित रखने का सामर्ध्य भी विद्यमान है| किसी भी परिवार अथवा समाज में विविध सदस्य अपनी मधुर वाणी की सहायता से आदर्श मानव संबंध विकसित करते हैं और एक सार्थक जीवन व्यतीत कर सकते हैं| कोई भी मनुष्य अथवा समुदाय अपनी मधुर वाणी का प्रयोग करते हुए समाज के किसी भी क्षेत्र में व्याप्त विडंबनाओं को दूर करने का सफल प्रयास कर सकता है| किसी भी अव्यवस्थित समाज के सुधार अथवा पुनर्निमाण में उसके विविध सदस्यों के व्यक्तित्व में विकसित मधुर वाणी की क्षमता बडा ही उपयोगी सिद्ध होगी|

महर्षि पतंजलि ने अपनी योग सूत्र संहिता में मानव मात्र के लिये अनुसरणीय 'अहिंसा', 'सत्यम्', 'अक्षेयं', 'ब्रह्मचर्य', 'अपरिग्रहम्', नामक पंच यमों और 'शौचम्-', 'संतोषम्', 'तटस्थि', 'स्वाध्यायम्', 'ईश्वर प्रणिधानम् नामक पांच नियमों का उल्लेख किया| इन पांचों नियमों में सब से पहला नियम है **'शौचम्'** अर्थात् शुभ्रता| यह शुभ्रता 'बाह्य' एवं 'आन्तरिक' नामक दो प्रकार की होती है| बाह्य शुभ्रता के अन्तर्गत सभी मनुष्यों को अपने ज्ञानेंद्रियों एवं कर्मेन्द्रियों को शुभ्र रखते हुए उनके द्वारा किये जाने वाले कर्मों को भी शुभ्र रखना होगा| यह तो सर्व विदित है कि मनुष्य के पांचों ज्ञानेन्द्रियों में मुह अर्थात जीभ का विशेष स्थान है जिस के सहारे वह अपने विचारों को वाणी देता है| ऋषिवर के अनुसार मनुष्य की वाणी की शुभ्रता से ही वह मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है| परलोक की बात तो दूसरी है, परन्तु उसकी वाणी की शुभ्रता उसे पहले इस लोक में सार्थक जीवन व्यतीत करनें में समर्थ बनायेगी| इसीलिये संत कबीर दास ने कहा था,

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय|
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय||

संत कबीरदास का यह दोहा किसी भी युग एवं किसी भी समाज के मनुष्य को क्रोध भरी मानसिकता से मुक्त होकर संतुलित स्वर में अन्य संबंधियों के सम्मुख अपने विचार प्रस्तुत करने का सन्देश देता है| एक दूसरे स्थान पर उन्होंने कहा **'घट घट में वह साई रमता कटुक वचन मत बोलो रे"**| उनका यह मानना है कि लोगों की जीभ पर लगाम नहीं रहता| अपनी बातों से वे अनेकों के दिल को छलनी करते रहते हैं| जनसाधारण की इस प्रव्रुत्ति को नियंत्रित करने के लिये संत कबीर ने इस पंक्ति में एक बहुत ही प्रभावी संकेत प्रस्तुत किया है| सभी प्राणियों के अन्त: में ईश्वर बसते हैं| किसी के प्रति कडवे शब्दों का प्रयोग करते हैं तो वे लगते तो उस परमात्मा को ही हैं| अत: प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी वाणी को मधुर बनायें ताकि वह भगवान को भी प्रसन्न कर सकें|

एक अन्यतम तथ्य यह है कि **'सत्यम् वद धर्मम् चर'** वाली आर्योक्ति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को सदैव सत्यकथन ही करते रहना चाहिये| परन्तु यह भी एक सर्वविदित तथ्य है कि सत्य कडुआ होता है और वह उसका श्रवण सामनेवाले को कष्ट पहुंचा सकता है| ऐसी स्थिति में साहित्यिक भाषा ही सत्यकथन करने वाले को सुविधा पहुंचा सकता है| इसीलिये श्रीमद्भगवद्गीता के 17वें अध्याय, **श्रद्धात्रय विभाग योग** में भगवान श्री कृष्ण ने कहा---

अनुद्वेगकरम् वाक्यम् सत्यम् प्रिय हितंचयत्|
स्वाध्यायाभ्यसनम् चैव वाग्मये तप उच्चते||

इस श्लोक के पहले चरण में ही भगवान ने स्पष्ट कर दिया कि किसी भी व्यक्ति को कभी भी उद्वेगपूर्ण वाणी का प्रयोग नहीं करना होगा चाहे वह सत्य वाचन सामने वाले व्यक्ति के हित में ही क्यों न हों| यदि वह व्यक्ति हितकारी सत्य को अनुद्वेगपूर्ण अर्थात् मधुर वाणी में प्रस्तुत करता तो सामने वाला व्यक्ति उसे सही ढंग से समझने की चेष्टा करेगा और उसके अनुपालन के लिये कटिबद्ध होगा| परन्तु संत कबीर दास ने **'पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूं पहार'** वाला दोहा कहकर हिन्दुओं के एवं **'कंकड पत्थड जोडिकै मसजिद लई चुनाय'** वाला दोहा कहकर मुसल्मानों के विरोधी हुए तो उनके माता पिता, नीरू और नीमा उन्हे

ऐसे कडवे सच बोलकर लोकविरोधी न बनने का आग्रह करते हैं तो वे उन्हें अपने ये दोहे कहने के कारण बडे ही संतुलित एवं मधुर वाणी में समझाते हैं| कथाकार **श्री भगवती शरण मिश्र** कृत **'देख कबीरा रोया'** उपन्यास में इस प्रसंग का बडा ही मार्मिक चित्रण द्रष्टव्य है| कबीर और उसकी माँ नीमा के मध्य संपन्न इस वार्तालाप पर जरा ध्यान दीजिये|

नीमा : कबीरा बहुत बुरा कर रहे हो| लोगों की ओर दोस्ती का हाथ बढाओ| दुश्मनी का नहीं|

कबीर ; मैं तो सब का दोस्त बनना चाहता हूँ माँ| पर सभी मुझे दुश्मन समझ लेते हैं| अब इसमें मेरा क्या कसूर है, तुम ही बोलो न!

नीमा : यह जीभ भी सब कुछ करती है बेटा! हाँ यह जीभ ही सब कुछ कराती है| इससे मधुर बात बोलो तो लोग शक्कर पर भागती चींटी की तरह तुम्हारी ओर खिंचे आयेंगे| इसी से करेला की तरह कटु आवाज निकालो तो लोग तुम्हारे पास फटकने से भी डरेंगे|

कबीर ; तो दुश्मनों को भी माफ करूं माँ?

नीमा ; और क्या! तुम्ही तो कहा करते हो कि यहाँ शत्रु मित्र कोई नही, सभी समान हैं| बंधु, भाई भाई| किसने कहा था यह पद 'ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोय*****?

कबीर ; मैं ने ही कहा था माँ|

नीमा : फिर तुम खरी कोटी क्यों सुनाते रहते हो? कभी मुसल्मान को तो कभी हिन्दू को| कभी दोनों को समान रूप से| अकेले सबसे जूझ लोगे?

कबीर: न न! नहीं जूझ पाऊँगा| पर मै अस्त्य, अत्याचार, उत्पीडन और शोषण को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता| अज्ञान के अंधकार को मुझे ज्ञान के प्रकाश से काटना ही है| उसका नतीजा चाहें जो भी हों| मैं, सत्य बोलूंगा माँ और सत्य कडवा होता ही है| लोग असत्य को पकडे बैठे हैं| मुझे उन्हें सत्य से साक्षात्कार कराना है| चाहे वह कितना ही कटु क्यों न हों|

नीमा : कबीर! क्या तुम ने सारे संसार को सुधारने का जिम्मा लिया है? यहाँ तो हजारों लाखों मिध्यावादी एवं अत्याचारी हैं| सब को रास्ते पर ला दोगे?

कबीर : नहीं माँ| यह कार्य तो असंभव है|

नीमा : फिर क्यों इतने पखेरे उठाते हो? स्वयं दुख सहते हो| सब को दुख देते हो|[1]

इसके आगे कबीर अपने समर्थन में एक व्यापक तर्क प्रस्तुत करते है| परन्तु इस प्रसंग से हमें यह तथ्य विदित हो जाता है कि मधुर वाणी का मानव जीवन में एक बडा ही महत्वपूर्ण स्थान होता है| इसी से मनुष्य अपने लिये एक अच्छी मित्र मंडली को विकसित कर सकता है, जिसके विविध सदस्यों से वह अपने सुख दुख बाँट सकता है|

महा भारत कथा पर आधारित नरेन्द्र कोहली का महाकाव्यात्मक उपन्यास **'महा समर'** का चौथा खण्ड **'कर्म'** का एक प्रसंग इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है| वारणावत में लाक्षागृह दहन काण्ड के पश्चात् पाण्डवों के ब्राह्मणों की भांति छद्मवेष में वनवास करते समय भीम द्वारा सालकटंकटी (हिडिंबा) के भाई हिडिंबासुर का वध कर दिया जाता है| इसके अनन्तर 'सालकटंकटी पाण्डुपुत्र भीम से विवाह कर उसे अपने साथ ले जाना चाहती है| तब माता कुन्ती उसे समझाती है कि वह ऐसा नहीं कर सकती| हिडिंबा माता कुन्ती से कई प्रश्न पूछ बैतती है कि वह ऐसा क्यों नहीं कर सकती|[2] माता कुंती उसके प्रत्येक प्रश्न का मधुर वाणी में उत्तर देती रहती है| उनके वार्तालाप के मध्य ऊबकर भीम माता कुन्ती से एक दो बार कह बैठता भी है, 'माँ! तुम व्यर्थ में इसके साथ सिर खपा रही हो? यह नहीं समझेगी| चलो||' 'यह सालकटंकटी नर बक्षण की अभ्यस्त है यह तुम्हारा भेजा खा जायेगी|'| इस पर माता कुन्ती उसे चुप रहने को कहकर सालकटंकटी को मानव संस्कृति में 'विवाह' और 'पारिवारिक व्यवस्था' जैसी परंपराओं एवं संकल्पनाओं के बारे में बडी ही मधुर वाणी में समझाती है| असुर संस्कृति की तुलना में मानव संस्कृति के अन्तर्गत विकसित सकारात्मक संस्कारों के महत्व का विश्लेषण करती हुई मीठी बानी में उसे शांत करती है| विवेच्य कृति के चार पृष्टों में वर्णित यह प्रसंग अत्यंत पठनीय हैं क्योंकि इसमें कथाकार ने यह स्पष्ट कर दिखाया है कि किसी भी चुनौतीपूर्ण स्थिति में मधुर वाणी का क्या महत्व होता है|

---

[1] देख कबीरा रोया, श्री भगवती शरण मिश्र, पृष्ट सं 66

[2] महा समर, खण्ड 4 'कर्म' डॉ नरेन्द्र कोहली पृष्ट 150 से 153

इस सन्दर्भ में तेलुगु कथाकार रेणुका जलदंटि विरचित 'తెర తొలగిన వేళ్', **'परदा हटते समय'** नामक कहानी का उल्लेख अत्यन्त समीचीन होगा|[3] प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने आदर्श मानव संबंधों के विकास में मधुर तथा सकारात्मक वाणी के महत्व को बडे ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया| संक्षेप में प्रस्तुत कहानी की वस्तु चेतना इस प्रकार है|

रामाराव एवं दमयंती नामक पति पत्नी इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं| श्री देवी दमयंती की बडी बहिन की बेटी है| एक सुबह वह दमयंती के पास यह शुभ समाचर लेकर आई कि उसके बडे बेटे **सन्तोष** को मेडिसिन में प्रवेश प्राप्त हुआ| उसके चेहरे पर प्रसन्नता भरी मुस्कान फैली हुई थी| लेकिन यह खबर सुनकर दमयंती के चहरे पर गंभीरता छा गई| वह कहने लगी, **'यह तो ठीक है| पर एम बी बी एस के बाद एम एस पूरा करते करते उसकी उम्र तो तीस साल से भी ज्यादा हो जाएगी न? तो ऊसकी शादी में देरी हो जायेग़ी| बडे बेटे को अविवाहित रखकर छोटे बेटे की तो शादी नहीं कर सकते न|'** इस पर श्री देवी का चेहरा फीका पड गया| वह 'ठीक है मौसी|' कहकर वहाँ से चली गयी| रामाराव और दमयंती इस पर खुश हुए|

अरविंद रामराव और दमयंती का इकलौता बेटा था| वह इतना अकलमन्द लडका नहीं था| इसीलिये उसे डाक्टरी न पढाकर डिग्री पढाया गया| आजकल वह मध्यप्रदेश में किसी जाने पहचाने ठेकेदार के यहाँ काम कर रहा है| **सरिता** दमयंती के बडे भाई की बेटी थी| एक दिन वह अपने पति **नरेश** के साथ अपनी बेटी की शादी का कार्ड लेकर दमयंती और रामाराव को आमंत्रित करने आई| कार्ड देकर उसने बताया कि दूल्हेवाले दहेज आदि पर कोई विशेष जोर नहीं दिया, इसलिये शादी धूमधाम से करने का विचार किया जा रहा है| जब दमयंती को यह बताया गया कि दूल्हा हैदराबाद में सॉफ्ट्वेर इजीनियर की नौकरी कर रहा है तो वह तुरत कह उठती है, **क्या सॉफ्ट्वेर इंजीनियर की नौकरी है! बूम खतम हो जाता तो इनकी नौकरियाँ भी खो जाती हैं| किसी सरकारी अधिकारी का रिश्ता होता तो अच्छा होता न! नौकरी की गारंटी रहती और आराम से हाथ पर हाथ धरे बैठा जा सकता है|'** इस पर नरेश मजाकिया स्वर में कह उठता है, **'ऑटी1 हमारा बडा दामाद एक सरकारी अफसर है| तब आपने कहा था कि सरकारी नौकरियों में कोई बढौत्तरे नहीं होती| किसी साफ्ट्वेयर इंजीनियर का रिश्ता तो अच्छा होता न?** इस पर दमयंती बात बदलती हुई कह उठी, **'दहेज में यदि कोई फ्लाट दे रहे हो तो लडकी के नाम पर ही उसे रजिस्टर कराना| नहीं तो शादी के कुछ ही दिन बाद लडका उसे बेच कर पैसा खा जायेगा| हमारे बगलवाले फ्लाट में राजाराम की बेटी की शादी होकर चार महीनें भी नहीं हुए| उस लडकी के पति ने उसकी सारी जायदाद बेच डाला| आजकल तो किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता|'** उसकी इन बातों से थोडा निराश हो कर नरेश और सरिता वहाँ से चले गये|

इतने में फोन की सुरीली घंटी बजी| दमयंती ने फोन उठाया| **'हलो| दमयंती! कैसी हो? बहुत दिन से बात नहीं हो पाई|'** उधर से उसके बचपन की सहेली **सुजाता** की आवाज सुनाई दे रही थी| दमयंती ने उत्तर देते हुए कहा, **'मै तो ठीक हूँ| बोलो! क्या बात है?'**

सुजाता ' **'हाल में मैं और मेरे पति टूर पर गये थे| ऊटी, कश्मीर, सिम्ला, डार्जिलिंग, नैनीताल जैसे कई सुन्दर शहरे देख कर आये| हमारी यात्रा बडी ही अच्छी रही| तुम्हें वाट्साप पर फोटो भेजूंगी| देखना| हमने तो बहुत एन्जॉय किया था|''** उसकी बातों में खुशी दमयंती को असहनीय लग रही थी|

दमयंती ; पैसा बरबाद करने में क्या मजा है? यूट्यूब ओपेने करने से कितने ही अच्छे अच्छे वीडियो देख सकती हो| सारे सुन्दर प्रदेश बडे ही आह्लादकारी ढंग से दिखाये जा रहे हैं ऐसी स्थिति में बेकार में पैसा खर्च करना जरूरी है क्या? मेरे पति ने भी ऐसी यात्रा पर जाने के लिये कहा तो मैं ने मना कर दिया| उन पैसों से दो सोने के कंगन बनवा लिये|'

सुजाता ; ठीक है दमयंती| बाद में बात करेंग' कहती हुई सुजाता ने बडे नीरस स्वर में फोन बंद कर दिया| दमयंती को उसका वह नीरस स्वर बडा अच्छा लगा|

कुछ देर बाद दमयंती का सगा भाई **रंगनाथ** अपनी पत्नी के साथ आया| उसके दो बच्चे हैं| दोनों की शादियाँ हो गई और वे सब अमेरीका में रहते हैं| वह दमयंती के घर के पास ही चार मकान बाद रहता है| आते ही वह मुस्कुराते हुए कहने लगा|

---

[3] ईनाडु तेलुगु दैनिक समाचार पत्र, आदिवारम् विशेषांक, 18 सितंबर 2022 पृष्ट सं 18

रंगनाथ ; मैं और तुम्हारी भाभी एक महीने में यू एस जा रहे हैं दीदी| तुम्हारे भांजे ने हमें सप्रैंज देने के लिये टिकेट बुक करने के बाद हमें बताया|' इस पर दमयंती गंभीर स्वर में कहने लगी कि सफर में वे लोग सावधान रहें| हवाई जाहाज की आजकल कई दुर्घटनायें हो रही हैं| उन पर भरोसा ही नहीं किया जा सकता| दमयंती के इन विचारों से उन्हें बडा बुरा लगा|

दूसरे दिन सुबह रामाराव दमयंती के साथ कॉफी पीते हुए अखबार देख रहा था| इतने में फोन बजने लगा| किसी अज्ञात व्यक्ति का फोन था| दमयंती ने फोन उठाया तो उधर से आवाज आने लगी| **'आप अरविंद की माँ हैं न! जिस क्वारी में आपका बेटा अरविंद काम कर रहा है वहाँ दुर्घटनावश बम विस्फोट होकर घटना स्थल पर ही कुछ लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल भी हुए| अभी मालुम नहीं हो पा रहा है कि दुर्घटना में कौन लोग क्षतिग्रस्त हैं| शक है कि उनमें आपका बेटा अरविंद भी हो सकता है| आप लोगों को यह सूचना देने***'** दमयंती अब और कुछ नहीं सुन पाई| उसे यह भी मालुम नहीं हुआ कि उसके हाथ से फोन कब नीचे गिर गया|

'दमयंती दमयंती!' 'दीदी', 'मौसी', 'ऑटी' तरह तरह की आवाजें उसके कानों में पडने से वह अचानक उठ बैठी| दिल के धडकन को थोडा नियंत्रित करने की कोशिश करने लगी| लेकिन उससे नहीं हो पा रहा था| सिसकती हुई रोने लगी| घर में आये हुए उसके सभी नजदीक के रिश्तेदार उसे तसल्ली देने लगे| मधुर वाणी में उसे धीरज बंधाने लगे| श्री देवी का बेटा **'सन्तोष'** तुरन्त अपने दोस्तों के साथ मिलकर अरविंद के अस्पताल का फोन नंबर मालुम करके अरविंद के साथ कॉन्फरेंस कॉल लगाया और उसकी माँ दमयंती से बात कराई| अरविद ने फोन पर अपनी माँ से नीरस आवाज में कहा कि उसे छोटे छोटे घाव ही लगे हैं और वह जल्दी ही ठीक हो जायेगा| इस घटना से दमयंती के रवय्ये में काफी बदलाव आया| लोगों को परेशान करनेवाली उसकी वाणी में अब मिठास एवं मधुरता आने लगीं| वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति में सकारात्मकता विकसित करने लगी| फोन पर बडी खुशी से वह कह उठी, **'सन्तोष! मेडिसिन में सीट अई है न! अच्छी तरह पढना| अब तक हमारे परिवार में कोई डॉक्टर नहीं बन पाया|'** इतने में दमयंती के भाई रंगनाथ ने बताया कि उसने उनके लिये अरविंद के पास जाने शाम के ट्रेन से टिकेट आरक्षित करवाये| यह सुनकर दमयंती और रामाराव दोनों की आंखों में आंसू निकल आये|

दमयंती : तुम लोगों के अमेरिका जाने से पहले ही हम आ जाएंगे| बच्चों के लिये चट्नियाँ, अचार, चावल में मिलाकर खाने के लिये पाउडर आदि बनाकर दूंगी| यहाँ के खाने की चीजों के लिये तो वे मुहताज हो गये होंगे न|'

उस समय उसे बचपन में शाम को दीपाराधन करती हुई उसकी मँ का यह कहना याद आया **'अडोस के लोग सुखी रहें, पडोस के लोग संतुष्ट रहें| घर में सब खुश रहें, बाहर सब प्रसन्न रहें|'** कहती हुई भगवान की मूर्ती के सामने हाथ जोडकर प्रार्थना करती थी तो वह, **'अडोस पडोस जैसे भी रहें, तुम्हें क्या फरक पडता है माँ?** कहती हुई वह जोर से हंसती थी| तो उसकी माँ कहती थी, **'यदि वे लोग सुखी रहेंगे तो हमारी मुसीबत में वे हमारी मदद कर पायेंगे बेटी'** अपनी माँ की इन बातों को याद करती हुई पश्चात्तप दमयंती की आखों से अश्रुधारा बहने लगी| थोडे ही समय में वह शांत होकर मानव जीवन में मधुर वाणी एवं सकारात्मक विचारों की अभिव्यक्ति की महत्ता का अवगाहन करने लगी| तेलुगु की ऐसी समसामयिक कहानियों की वस्तु चेतना से परिचित होकर कोई भी सहृदय पाठक अपनी वाणी को मधुर ही नहीं बल्कि स्कारात्मक भी बनाने की चेष्टा करेगा, इसमें कोई शक नहीं हो सकता| मानव मात्र के वैय्यक्तिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में सुख एवं दुख दोनों का होना स्वाभाविक है| परन्तु सामने वालों को इन क्षेत्रों के दुखों अथवा कष्टों के बारे में ही कहते रहना उन्हें परेशान करना ही होगा| ऐसी आदत रखने वाले कोई व्यक्ति यदि ऐसी साहित्यिक सामग्री का पठन करेंगे तो उनके व्यक्तित्व में सकारात्मकता, विशेष रूप से उनकी वाणी में मधुरता भर जायेंगी|

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव जीवन में मधुर वाणी की जो महत्ता है वह अनन्य सामान्य है| ईश्वर ने इस अनन्त सृष्टि के असंख्य प्राणियों में मात्र मनुष्य को वाक्क्षमता दी ताकि वह उसकी सहायता से प्रभावी संचार करते हुए अपने जीवन को सार्थक बना सकें| उसके इसी अद्भुत सामर्ध्य के कारण अनादि काल में मानव समाज का निर्माण हुआ और उसका विकास होता आया| उसकी इसी वाक्शक्ति के कारण वह अपने जीवन के विविध क्षेत्रों में अच्छे मानव संबंध विकसित कर सकता है| परन्तु यह तो एक सर्वविदित सत्य है कि मानव इतिहास के विविध युगों में विविध मनुष्यों ने अपनी वाक्क्षमता का दुरुपयोग करते हुए दूसरों को कष्ट देते हुए स्वयं दुख सहते आ रहे हैं| वैय्यक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक क्त्रों में अनेक विडंबनापूर्ण स्थितियाँ उत्पन्न करते आ रहे हैं\ प्रस्तुत निबंध के उपर्युक्त विवेचन में दिये गये उदाहरणों एवं प्रसंगों से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य द्वारा मानव जीवन में मधुर वाणी की महत्ता का प्रचलन पूर्णतया संभव है बशर्ते कि अध्यापक गण, समीक्षक, शोध निर्देशक एवं शोधार्थी इस तथ्य को सोदाहरण सहृदय पाठकों एवं छात्र छात्राओं को समय और सन्दर्भ के अनुसार समझाते रहें|